Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

छत्तीसगढ़ का नामकरण एवं साहित्य में प्रयुक्त

डॉ. माग्रेट कुजूर*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, धरमजयगढ, जिला- रायगढ़ (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – छत्तीसगढ़ का नामकरण अर्वाचीन है तथा पूर्व में इस राज्य के लिए कोशल, महाकोशल, दक्षिणकोशल, चेदिशगढ़, दण्डकारण्य, महाकांतार आदि नामों से अधिष्ठित किया जाता रहा है। छत्तीसगढ़ में पाषाण युगीन मानव के द्वारा गुफा की दीवारों में अनेक शैलचित्र रेखांकित किये गये हैं। ये चित्र उनकी दैनिक जीवन की गतिविधियों व सामाजिक संस्कृति की गतिविधियों का प्रतिबिम्ब है, जिसके कारण पुरातत्ववेत्ताओं ने इस राज्य को मानवीय विकास व सभ्यता का केन्द्र बताया है।

छत्तीसगढ़ सुदृढ़, सुनिर्मित, अक्षेद्य एवं 36 अभेद्य गढ़ों का वृन्द रहा है। 'ऐसा माना जाता है कि यहाँ 36 राजवंश के लोग निवास करते थे। वाल्मीकी रामायण में दो कोशल प्रदेशों का विवरण मिलता है, सरयू तट पर अवस्थित एवं विस्तृत फैले महाजनपद को उत्तारकोशल कहा जाता था तथा विध्यांचल पर्वत श्रृंखला के दक्षिण भाग के विस्तृत क्षेत्र को दक्षिण कोशल कहा जाता था। दक्षिण कोशल राज्य व्यापक विस्तृत एवं समृद्ध होने के कारण महाकोशल नाम से लोगों के द्वारा प्रयुक्त होता था। वन्य क्षेत्र की अधिकता के कारण महाकांतार का भी उल्लेख मिलता है। 'दण्डकारण्य से तात्पर्य बस्तर के वृहद वन क्षेत्र से है, दण्डकारण्य के क्षेत्र में जयपुर स्टेट, उड़ीसा का पूर्वी रियासत एवं चाँदा जिला आते हैं।'[1] रामचरितमानस जो कि गोस्वामी तुलसीदास की एक महान् कृति है, जिसमें दंडक वन का वर्णन मिलता है, जहाँ अनेक ऋषिमुनी तप-तपस्या साधना करते थे और आश्रमों में रहते थे। इस बात का भी उल्लेख मिलता है कि भगवान श्री राम लक्ष्मण एवं जानकी जी के साथ वनवास काल में यहाँ रहे। ऋषि अगत्स्य ने भगवान श्रीराम से कहा था-

'दंडक वन पुनीत प्रभु करहू।
उग्र शाप मुनिवर कर हरहू।।'[2]

हे! प्रभु आप इस दंडक वन को पवित्र कीजिए और मुनियों को घोर श्राप से मुक्त कीजिए।बस्तर क्षेत्र के प्रथम राजा का नाम राजा दंडक था, जो मुनियों के कुल का माना जाता है। कई स्थलों पर रामायण काल में छत्तीसगढ़ के इस भू-भाग के लिए दण्डकवन, दण्डकारण्य आदि नामों का उल्लेख मिलता है। बस्तर के अरण्यक क्षेत्र को दण्डकारण्य ही कहा जाता है। मदनलाल गुप्ता जी ने अपनी पुस्तक 'छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन' में लिखा है कि 'शुक्राचार्य, राजा इच्छुक के तृतीय पुत्र दण्ड के गुरू थे। शुक्राचार्य जी अपनी रूपवती कन्या 'अरजा' के साथ छत्तीसगढ़ के इस दण्डकारण्य क्षेत्र में रहते थे। एक बार राजा दण्ड शिकार खेलते शुक्राचार्य जी के इसी आश्रम में जा पहुँचे। उस समय शुक्राचार्य वहाँ पर नहीं थे, पर उनकी पुत्री अरजा उपस्थित थी। राजा दण्ड ने कामातुर होकर उस कन्या का बलात्कार किया। तत्पश्चात् इस घटना की जानकारी होने पर शुक्राचार्य ने राजा दण्ड को श्राप दिया, जिसके कारण उसका साम्राज्य अरण्य के रूप में परिवर्तित हो गया। दण्ड के नाम से यह क्षेत्र दण्डकारण्य के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह क्षेत्र वर्तमान बस्तर का अरण्य क्षेत्र है।'[3]

स्पष्ट है कि इस क्षेत्र को 'कोशल', 'दक्षिण कोसल', 'दण्डकारण्य' आदि नामों से अभिहित किया जाता रहा है, लेकिन जितने भी नामों का उल्लेख किया गया है उसमें सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय नाम 'दक्षिण कोसल' ही रहा है। डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा ने इस बात का उल्लेख किया है कि 'अभिलेखीय प्रमाणों में दक्षिण कोसल नाम समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति, जाजल्यदेव के पिता पृथ्वीदेव प्रथम के ताम्रपत्र (1069 ई.) में, रतनपुर के इस भाग केा कोसल कहा गया। 17वीं शताब्दी के प्रसिद्ध आंचलिक कवि गंगाधर मिश्र ने अपने प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ यकोसलानंद महाकाव्य' में इस क्षेत्र को दक्षिण कोसल कहा है। अत: यह विदित होता है कि 17वीं शताब्दी के अंत तक इस भू-खण्ड के लिए दक्षिण कोसल नाम अभिषित रहा है। तत्कालीन छत्तीसगढ़ राज्य दक्षिण कौसल का मुख्य, मध्य एवं केन्द्रीय भाग था।'[4]

वर्तमान 'छत्तीसगढ़' नाम शब्द का प्रयोग आधुनिक है तथा इसके नामकरण के संबंध में विद्धानों ने कई अलग-अलग विचार प्रस्तुत किये हैं 'पुरातत्व विद कनिंघम के सहयोगी जे. डी. वेगलर ने यहाँ आकर बसे 36 चमार लोगों के निवास के आधार पर 'छत्तीस घर' का प्रचलन से नामकरण हुआ।'[5] छत्तीसगढ़ के नामकरण को लेकर और मत भी सामने आए हैं। पहले इस प्रदेष को चेदि वंश के राजाओं का राज्य होने के कारण 'चेदिसगढ़' भी कहा जाता था, जो कालांतर में छत्तीसगढ़ नाम के रूप में प्रचलित हुआ। 'राजा जाज्वल्य देव द्धितीय ने अपने आप को चेदि परिवार के नेता के रूप में संबोधित किया है।'[6] छत्तीसगढ़ में कल्चुरी शासक त्रिपुरी (जबलपुर के पास) से आए थे, जिसका वर्णन 'जयचंद विद्यालंकार ने अपने एक प्रसिद्ध ग्रंथ यत्रिपुरी का इतिहास' में उल्लेख किया है कि इस भू-क्षेत्र में है हयवंशीय (चेदिसवंशीय) लम्बे समय तक राज्य किया है। लेकिन ऐतिहासिक तथ्यों व जन-परम्परा में चेदिसगढ़ नाम का उल्लेख कहीं पर भी नहीं मिलता।'[7] रतनपुर के प्रसिद्ध कवि बाबू रेवाराम व गोपाल मिश्र ने इस बात का उल्लेख किया है कि, रतनपुर राज्य में छत्तीस क्षत्रीय वंशों ने राज किया है, लेकिन यह तर्क उचित नहीं लगता। साहित्य मर्मज्ञ डॉ. राजीव तिवारी ने उल्लेख किया है कि 'छत्तीसगढ़ का नामकरण कल्चुरियों के शासनकाल में हुआ

होगा। इस संबंध में पुरातत्वविदों ने अपने राय में कहा है कि पहले कल्चुरी शासक जो कि त्रिपुरी के रहने वाले थे, शहडोल के समीप क्षेत्र से पेण्ड्रा पसान क्षेत्र से होते हुए तुमान दर्रे से आगे बिलासपुर जिले के पास कटघोरा नामक स्थान के आसपास बसे हैं, इस क्षेत्र में आने पर उनका अनेक गढ़ों से युद्ध या आपसी समझौता हुआ होगा। जिसमें से कल्चुरियों ने 18 गढ़ों पर राज आधिपत्य स्थापित कर लिया होगा, जो कालांतर में 36 गढ़ों तक पहुँच गया होगा। उल्लेखनीय है कि ये सभी गढ़ बिलासपुर जिले के ही क्षेत्र में आते थे। आगे चलकर भाषा नाम व परिस्थितियों के आधार पर क्षेत्रफल व्यापक होता गया। मैकल क्षेत्र और कल्प जनपद के खण्ड ही भाषायी आधार पर छत्तीसगढ़ के साथ जुड़ गये। इस प्रकार पेण्ड्रा, सरगुजा, रायगढ़ जो कि दक्षिण कोसल से अलग थे, छत्तीसगढ़ की सीमा में कालांतर में सम्मिलित हो गये।'[8] कई विद्धानों का अनुमान है कि छत्तीसगढ़ का नाम बहुत अधिक प्राचीन नहीं है इस नाम का प्रयोग विक्रम संवत 1550 में प्रचार-प्रसार में प्रयुक्त हुआ होगा।

हीरालाल शुक्ल व रायबहादुर जैसे विद्धानों के अनुसार- 'इस भू-क्षेत्र में कई वर्षों तक चेदिशवंशी राजाओं का राज्य रहा है, जिसके कारण इस क्षेत्र को चेदिशगढ़ कहा गया। जिसे कालांतर में छत्तीसगढ़ कहा गया। लेकिन कई विद्धान हीरालाल षुक्ल व रायबहादुर के इस मत से सहमत नहीं हैं। द्वितीय मत यह भी है कि रतनपुर के समृद्धशाली है हयवंशी राजाओं के अधीन छत्तीसगढ़ (किले) थे जिसके कारण इस क्षेत्र को छत्तीसगढ़ नाम से संबोधित किया गया।'[9]

छत्तीसगढ़-रतनपुर राज्य के छत्तीसगढ़ों में 18 गढ़ शिवनाथ नदी के उत्तार में और 18 गढ़ शिवनाथ नदी के दक्षिण में स्थित थी और यह पूरा भाग छत्तीसगढ़ संबोधित होने लगा ये किले (गढ़) निम्नलिखित हैं- 'रतनपुर, मारो, विजयपुर, पँड़रभठा, खरौद, कोटगढ़, नवागढ़, सौंठी, आखे, सेमरिया, लाफागढ़, छूरी, चाँपा, केंदा, मातिन, उपरोड़ा, पेंड्रा और कुटकुली हैं। इसी तरह शिवनाथ नदी के दक्षिण में निम्नलिखित किले विद्यमान थे- रायपुर, पाटन, सिमगा, सिंगापुर, लवन, अमोदा, दुर्ग, सरसा, सिरसा, मोहदी, खल्लारी, फिंगश्वर, सिरपुर, राजिम, सिंधनगढ़, सुअरमार, टेंगनागढ़ और सकलवारा।'[10]

इन गढ़ों का अस्तित्व प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आज भी विद्यमान है। भले ही इनके स्वरूप व नाम में बदलाव हो गया है। रायपुर व बिलासपुर जिले के गजेटियरों राजपत्रों में उल्लेख मिलता है। मि. चिश्म जो कि उस समय बिलासपुर जिले के बन्दोबस्त अधिकारी थे, उन्होंने भी अपने कई दस्तावेजों में इन गढ़ों का विवरण प्रस्तुत किया है। अनेक इतिहासकारों की जनसमुदाय एवं विद्धानों का राय है कि उक्त छत्तीस गढ़ों के आधार पर ही इस अंचल को छत्तीसगढ़ नाम दिया गया है तथा इस मान्यता व विचारधारा को किसी ने भी अस्वीकार नहीं किया एवं गढ़ों की गिनती व गणना के संबंध में विद्धानों के मत थोड़े भिन्न हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भले ही विद्धानों के मतों में वैविध्य हो लेकिन छत्तीसगढ़ नाम का आधार ये 36 गढ़ ही है।

साहित्य में प्रयुक्त छत्तीसगढ़- हिन्दी के वे कवि जिन्होंने अपनी रचनाओं में 'छत्तीसगढ़' शब्द का प्रयोग किया है, उनकी अवधि लगभग तीन सौ वर्षों से अधिक की नहीं है। लोकसाहित्य में विवेचना के आधार पर छत्तीसगढ़ राज्य में राजा कल्याणसाय जो कि जहाँगीर और मुगल शासक अकबर के समकालीन थे कल्याणसाय के शासन में छत्तीसगढ़ी बोली विचार भाव एवं भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम थी। 'दंतेवाड़ा क्षेत्र से प्राप्त साक्ष्य अभिलेख को श्री दयाशंकर शुक्ल ने (सन् 1703) छत्तीसगढ़ी का प्रारंभिक लेख स्वीकार किया है। सन् 1724 में कल्चुरियों के अंतिम शासक राजा अमरसिंह का आरंग-अभिलेख को डॉ. विनय कुमार पाठक ने छत्तीसगढ़ी बोली, भाषा का प्रथम रूप निरूपित किया है।'[11] सिंहासन बत्तीसी के काव्यानुवाद बाबू रेवाराम कृत यविक्रम- विलास' ग्रंथ में छत्तीसगढ़ का प्रयोग इस प्रकार किया है -

'तिनके दक्षिण कोसल देसा, जहं हरि ओतु केसरी बेसा,
तासु मध्य 'छत्तीसगढ़' पावन, पुण्यभूमि सुर मुनिमनभावन।
रत्नपुरी तिनमें है नायक, कासी सम सब विधि सुखदायक।'[12]

अवधि भाषा एवं हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी रचना में रतनपुर स्पष्ट उल्लेख किया है, लेकिन 'छत्तीसगढ़' शब्द का उल्लेख हमें उनकी रचनाओं में कही पर भी नहीं मिलता-

'दाखिन दाहिने रहै तिलंगा,
उत्तर मांझ होय करह करंगा,
मांझ रतनपुर सौह दुआरा,
झारखण्ड ये बांय पहारा।'[13]

राजनैतिक संदर्भों में छत्तीसगढ़ शब्द का प्रथम प्रयोग राजा राजसिंह 1689-1712 ई. के राज्याश्रय में रहने वाले कवि गोपाल मिश्र ने अपनी कृति 'खूब तमाशा' में रतनपुर के संदर्भ में किया था-

'बरन सकल पुर देव देवता नर नारी रस रस के
बसय छत्तीसगढ़ कुरी सब दिन के रस वासी बस बस के।'[14]

छत्तीसगढ़ शब्द का प्रयोग खैरागढ़ राज्य के सुप्रसिद्ध राजा लक्ष्मीनिधि राय के दरबार में रहने वाले चारण कवि दलराम राव ने सन् 1497 में इस प्रकार उल्लेख किया था-

'लक्ष्मीनिधि राय सुनौ चित दै, गढ़ छत्तीस में न गढ़ैया रही।
मरदुम रही नहिं मरदन के, फेर हिम्मत से न लड़ैया रही।।
भय भाव भरे सब काँप रहे, भय है नहीं जाय डरैया रही।
दलराम भनै सरकार सुनौ, नृप कोड न टाल अड़ैया रही।।'[15]

स्पष्ट है कि उक्त पंक्तियों को 1497 ई. में चारण कवि दलराम राव के द्वारा लिखी गई है, पर सच तो यह है कि वैदिक साहित्य एवं ग्रंथों में छत्तीसगढ़ नाम या शब्द का उल्लेख नहीं है। बल्कि रतनपुर, मणिपुर, चित्रांगदपुर, आदि का उल्लेख कई स्थलों पर मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ठाकुर, केदारनाथ (1982). *बस्तर भूषण.* पृ. 6.
2. कृष्णदत्त, श्री खेमराज (1904). जी गोस्वामी तुलसीदास, रामायण.पृ. 401.
3. राठौर डॉ. विद्यासिंह (2016). *शोधप्रबंध, विषय आधुनिक संदर्भ में छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का विवेचनात्मक अध्ययन*, इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़. पृ. 27-28.
4. शर्मा, डॉ. पालेश्वर एवं शर्मा डॉ. अभिलाषा (2008). *छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास.* पृ. 16.
5. *आर्के लॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, कनिघम-भाग 7, पृ. 5.*
6. *रायपुर डिस्ट्रिक गजेटियर, 1909 ए.ई. नेनल पृ. 2 तथा ए.पी.*

ग्राफिक्स इंडिका भाग– 1 पृ. 45 जाज्यलदेव लेख.

7. राय बहादुर, हीरालाल (1917). *भौगोलिक नामर्स.* पृ. 2.
8. तिवारी, डॉ. राजू. *रतनपुर को सती काशाप.* पृ. 28.
9. नायडू डॉ.हनुमंत (2009). *छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का लोकतात्विक एवं मनोवैज्ञानिक अनुशीलन.* पृ. 2, 4.
10. *प्रतियोगिता सारांश, छत्तीसगढ़ समान्य ज्ञान, ईशिता प्रकाशन, सन् 2017 पृ. 10.*
11. टण्डन, डॉ. रमेश (संपादक) (2020). *लोकसाहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य.* सर्वप्रिय प्रकाशन पृ. 157.
12. अलंग, डॉ. संजय (2018). *छत्तीसगढ़ इतिहास और संस्कृति* (तृ.सं.). एकेडेमी प्रेस इलाहाबाद, अनामिका प्रकाशन, पृ. 12.
13. शेष, डॉ. शंकर. *छत्तीसगढ़ का अध्ययन.* पृ. 6.
14. *प्रतियोगिता सारांश, छत्तीसगढ़ समान्य ज्ञान, ईशिता प्रकाशन, सन् 2017 पृ. 9.*
15. अलंग, डॉ. संजय (2018). *छत्तीसगढ़ इतिहास और संस्कृति* (तृ.सं.). एकेडेमी प्रेस इलाहाबाद, अनामिका प्रकाशन, पृ. 21

****